पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-जी-3-डी.एल. (एन.)/084/2015-17 प्रकाशित: 16.09.2015 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868002130

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् हरियाणा प्रान्तीय सम्मेलन

रविवार, 20 सितम्बर 2015,
प्रातः 11 से 2 बजे तक
आर्य समाज,नागौरी गेट,हिसार
हजारों की संख्या में पंहुचे
– ईश आर्य,संयोजक

वर्ष-32 अंक-8 आश्विन-2072 दयानन्दाब्द 191 16 सितम्बर से 30 सितम्बर 2015 (द्वितीय अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.
प्रकाशित: 16.09.2015, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें स्थापना दिवस पर 'राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन' सम्पन्न

हिन्दु समाज की घटती जनसंख्या देश की अखण्डता के लिए घातक - डा.अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, के.आ.यु.प.)

एक हजार युवाओं का हुआ यज्ञोपवीत संस्कार

महापौर सुभाष आर्य का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य,ओमप्रकाश सिंघल, मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट) व आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर) व द्वितीय चित्र–सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष मायाप्रकाश त्यागी का स्वागत करते डा. अनिल आर्य,प्रवीन आर्य (गाजियाबाद), स्वतन्त्र कुकरेजा (करनाल), रामफल खर्ब व अजय तनेजा (जनकपुरी)

नई दिल्ली । रविवार, 6 सितम्बर 2015, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्,नई दिल्ली के 37 वें स्थापना दिवस पर स्वामी श्रद्धानन्द सामुदायिक केन्द्र, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली में ''राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन'' का भव्य आयोजन किया गया। सम्मेलन में देश के विभिन्न प्रान्तों से 1500 से अधिक आर्य प्रतिनिधि बड़े ही उत्साह के साथ सम्मिलित हुए। इस अवसर पर 1000 युवक/युवतियों का यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुआ। युवा विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने कहा कि चरित्रवान युवा राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है और राष्ट्र का भविष्य चरित्रवान व संस्कारित नौजवानों पर ही है। आर्य समाज दिग्भ्रमित युवकों को सही दिशा देकर देश की दशा व दिशा को बदलने का कार्य करेगा। डा. आर्य ने जनगणना में हिन्दुओं की घटती जनसंख्या पर चिन्ता व्यक्त करते हुए इसे राष्ट्रीय अखण्डता के लिये घातक बताया। उन्होंने कहा कि देश के जिस जिस हिस्से में हिन्दु कम हुआ है, वहां अलगाववाद व आंतकवाद पनपा है ।

श्री सुभाष आर्य (महापौर,दक्षिण दिल्ली नगर निगम) ने कहा कि आज आर्य समाज की आवश्यकता पहले से कहीं अधिक बढ़ गयी है,आज महर्षि दयानन्द जी के जीवन चरित्र व आदर्शो को जीवन में अपनाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि समाज में चारों ओर अन्धविश्वास, गुरूडमवाद, पाखण्ड बढ़ रहा है, आर्य युवकों को चाहिए की वह इन कुरीतियों खिलाफ आगे आकर जनजागरण अभियान चलायें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री मायाप्रकाश त्यागी ने कहा कि आज भ्रष्टाचार, आंतकवाद, पाखण्ड–अन्धविश्वास समाज की जड़ों को खोखला कर रहे हैं, इनका मुकाबला वैचारिक क्रान्ति से ही किया जा सकता है, विचारों की शक्ति सबसे बड़ी शक्ति होती है, देश में विघटनकारी ताकतें सर उठा रही हैं सरकार को चाहिये कि देश की अखण्डता से खिलवाड़ करने वालो के साथ सख्ती के साथ पेश आये।

श्री ओमप्रकाश सिंघल (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, विश्व हिन्दु परिषद्) ने कहा कि ऋषि दयानन्द के आदर्शों पर चलकर ही भारतीय संस्कृति व सभ्यता की रक्षा हो सकती है, देश की वर्तमान परिस्थितियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने की अत्यन्त आवश्यकता है तभी हम हिन्दू समाज पर हो रहे चौतरफा आक्रमणों का मुकाबला कर सकते हैं। समारोह का संचालन परिषद् अध्यक्ष डा. अनिल आर्य ने किया।

समारोह अध्यक्ष ऐमिटी शिक्षण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष डा. अशोक कुमार चौहान ने अपने सन्देश में कहा कि भारत को विश्व शक्ति बनना है, लेकिन उसमें विचार शक्ति देने का कार्य आर्य जनों को ही करना है। समारोह का उद्घाटन 'ओउम्' ध्वज फहरा कर समाजसेवी श्री राजीव कुमार (परम घी) ने किया।

परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री महेन्द्र भाई ने कहा कि परिषद् देश भर में युवा निर्माण का कार्य तीव्र गति से चलायेगी।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

मिशन–25 का संकल्प–1000 से अधिक 15 से 25 वर्ष तक के आर्य युवक व युवतियां ध्वजारोहण का द्रश्य, क्या आपने अपनी आर्य समाज से कोई युवा भेजा, क्या आपका कोई पोता पोती इसमें आया– जरा विचार करो आर्यो।

स्वामी दयानंद और आर्य समाज की हिंदी भाषा को देन

(10 वें विश्व हिन्दी सम्मलेन 10-12 सितम्बर के अवसर पर जनप्रचार हेतु प्रचारित)

—डॉ0 विवेक आर्य

स्वामी दयानंद ने 1857 के स्वाधीनता संग्राम को असफल होते देखा था और उसके असफल होने का मुख्य कारण भारतीय समाज में एकता की कमी होना था। स्वामी दयानंद ने इस कमी को समाप्त करना आवश्यक समझा। उन्होंने चिन्तन–मंथन किया कि अगर भारत देश को एक सूत्र में जोडना है तो उसकी एक भाषा होना अत्यंत आवश्यक है। यह रिक्त स्थान अगर कोई भर सकता था तो वह हिंदी भाषा थी। स्वामी दयानंद द्वारा सर्वप्रथम 19 वीं सदी के चौथे चरण में एक राष्ट्र भाषा का प्रश्न उठाया गया और स्वयं गुजराती भाषी होते हुए भी उन्होंने इस हेतु आर्यभाषा (हिंदी) को ही इस पद के योग्य बताया। अपने जीवन काल में स्वामीजी ने भाषण, लेखन, शास्त्रार्थ एवं उपदेश आदि हिंदी में देने आरंभ किये जिससे हिंदी भाषा का प्रचार आरंभ हुआ और सबसे बढ़कर जनसाधारण के समझने के लिए हिंदी भाषा में वेदों का भाष्य किया। इससे हिन्दू साहित्य और भाषा को नये उपादान प्रदान किये और प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिंदी भाषा को जानना प्रायरू अनिवार्य कर दिया गया।

स्वामी जी इससे पहले संस्कृत में भाषण करते थे इसलिए केवल पठित पंडित वर्ग ही उनके विचारों को समझ पाता था। कालांतर में जब उन्होंने हिंदी भाषा में व्याख्यान प्रारंभ किये तो उससे जन साधारण की उपस्थिति न केवल अधिक हो गई अपितु जनता के लिए उनके प्रवचनों को ग्रहण करना आसान हो गया। स्वामीजी ने अपने संपर्क में आने वाले सभी देशी राजाओं को अपने राजकुमारों को हिंदी के माध्यम से धार्मिक शिक्षा दिलवाने की सलाह दी थी जिससे उनमें देश–भक्ति का सूत्रपात हो सके।

स्वामी जी द्वारा अपने सभी ग्रन्थ हिंदी भाषा में रचे गये जैसे सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, वेद–भाष्य आदि। इनके सैकड़ों संस्करण छपे और देश में उनके प्रचार से हिंदी भाषा के प्रचार को जो गति मिली उसका पाठक सहजता से अनुमान लगा सकते हैं।

1882 में भारतीय शिक्षण संस्थाओं में भाषा के निर्धारण को लेकर श्हन्टर कमीशन्य के नाम से कोलकता में आयोग का गठन सर विलियम हंटर की अध्यक्षता में किया गया था। स्वामी दयानंद ने इस कमीशन के समक्ष हिंदी को शिक्षा की भाषा निर्धारित करने के लिए आर्यसमाजों को निर्देश दिया कि वे हिन्दी भाषा के समर्थन में हंटर आयोग में अपनी सम्मति भेजें। फर्रुखाबाद, देहरादून, मेरठ, कानपुर, लखनऊ आदि आर्यसमाजों को भी इस विषय पर कोलकता पत्र भेजने को कहा था।

हिंदी भाषा भारतीय जनमानस की मानसिक भाषा है इसलिए उसे ही पाठ्यक्रम की भाषा के रूप में स्वीकृत किया जाये ऐसा समस्त आर्यसमाज द्वारा हिंदी भाषा के प्रचार के लिए प्रयत्न किया गया था। निश्चित रूप से हिंदी भाषा के प्रचार के लिए यह कार्य ऐतिहासिक महनव का था।

स्वामी जी के देहांत के पश्चात् आर्यसमाज के सदस्यों ने हिंदी भाषा के प्रचार प्रसार में दिन रात एक कर दिया। आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा लाखों पुस्तकें हिंदी भाषा में अलग अलग विषयों पर लिखी गई। गद्य, पद्य, काव्य, निबन्ध आदि सभी प्रकार के साहित्य की रचना हिंदी भाषा में हुई। हजारों पत्र–पत्रिकाओं का हिंदी भाषा में प्रकाशन हुआ। सैंकड़ों पाठशालाओं, विद्यालयों, गुरुकुलों के माध्यम से हिंदी भाषा का सम्पूर्ण भारत में ही नहीं अपितु विदेशों में जैसे मारीशस, फिजी, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में भी हिंदी भाषा का प्रचार प्रसार हुआ।

आर्य दर्पण (आर्य समाज का सर्वप्रथम हिंदी पत्र) , आर्य भूषण, आर्य समाचार, भारतसुदशा प्रवर्तक, वेद प्रकाश, आर्य पत्र, आर्य समाचार, आर्य विनय, आर्य सिद्धांत, आर्य भगिनी आदि अनेक पत्र तो विभिन्न आर्य संस्थाओं द्वारा 20 वीं शताब्दी आरम्भ होने से पहले ही निकलने आरम्भ कर दिए थे। 20 वीं शताब्दी में इनकी संख्या इतनी थी कि इस लेख में उन्हें समाहित करना संभव नहीं हैं। पाठक इस उल्लेख से समझ सकते हैं कि आर्यसमाज के प्रचार का माध्यम हिन्दी होने के कारण हिंदी भाषा के उत्थान में आर्यसमाज का क्या योगदान था।

स्वामी जी के प्रशंसक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की हिंदी भाषा को देन से साहित्य जगत भली प्रकार से परिचित है। कालांतर में मुंशी प्रेमचंद, कहानीकार सुदर्शन, आचार्य रामदेव, बनारसी दास चतुर्वेदी, इंद्र विद्यावाचस्पति, सुमित्रानंदन पन्त, मैथिलिशरण गुप्त, पदम् सिंह शर्मा आदि से आरंभ होकर हरिवंश राय बच्चन, विष्णु प्रभाकर, क्षितीश वेदालंकार आदि तक हजारों की संख्या में आर्यसमाज से दीक्षित और अनुप्राणित साहित्यकारों ने हिंदी साहित्य की रचना की जिससे हिंदी समस्त भारत की साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित हो गई।

स्वामी श्रद्धानंद ने अपने पत्र सद्धर्म प्रचारक को एक रात में उर्दू से हिंदी में परिवर्तित कर दिया, उन्हें आर्थिक हानि अवश्य उठानी पड़ी पर उनके पत्र की प्रसिद्धि को देखते हुए उसे पढ़ पाने की इच्छा ने अनेकों पाठकों को देवनागरी लिपि सीखने के लिए प्रेरित किया।

पत्रकारिता में नये आयाम आर्यसमाज के सदस्यों के स्थापित किये। पंजाब के सभी प्रसिद्ध अखबार जैसे प्रताप, केसरी, अर्जुन, युगांतर आदि अनेक पत्र हिंदी में ही निकलते थे, जो आर्यसमाजियों ने ही चलाए थे। पंजाब के जन आंचल में उस काल में उर्दू मिश्रित फारसी भाषा बोली जाती थी जिसके प्रचार में उर्दू पत्र जमींदार आदि का पूरा सहयोग था।

सैकड़ों गुरुकुलों, डीएवी स्कूल और कॉलेजों में हिंदी भाषा को प्राथमिकता दी गई और इस कार्य के लिए नवीन पाठ्य क्रम की पुस्तकों की रचना हिंदी भाषा के माध्यम से गुरुकुल कांगड़ी एवं लाहौर आदि स्थानों पर हुई जिनके विषय विज्ञान, गणित, समाज शास्त्र, इतिहास आदि थे। यह एक अलग ही किस्म का हिंदी भाषा में परीक्षण था जिसके वांछनीय परिणाम निकले।

विदेशों में भवानी दयाल सन्यासी, भाई परमानन्द, गंगा प्रसाद उपाध्याय, डॉ0 चिरंजीव भारद्वाज, मेहता जैमिनी, आचार्य रामदेव, पंडित चमूपति आदि ने हिंदी भाषा का प्रवासी भारतीयों में प्रचार किया जिससे वे मातृभूमि से दूर होते हुए भी उसकी संस्कृति, उसकी विचारधारा से न केवल जुड़े रहे अपितु अपनी विदेश में जन्मी सन्तति को भी उससे अवगत करवाते रहे।

आर्यसमाज द्वारा न केवल पंजाब में हिंदी भाषा का प्रचार किया गया अपितु सुदूर दक्षिण भारत में, आसाम, बर्मा आदि तक हिंदी को पहुँचाया गया। न्यायालय में दुष्कर भाषा के स्थान पर सरल हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए भी स्वामी श्रद्धानंद द्वारा प्रयास किये गये थे।

वीर सावरकर हिंदी भाषा को स्वामी दयानंद के देन पर लिखते हैं– महर्षि दयानंद द्वारा लिखित सत्यार्थ प्रकाश में जिस हिंदी के दर्शन हमें मिलते हैं, वही हिंदी हमें स्वीकार है। यह सरल, अनावश्यक विदेशी शब्दों से अलिप्त होकर भी अत्यंत अर्थ वाहक तथा प्रवाही है। महर्षि दयानंद ही सर्वप्रथम नेता थे, जिन्होंने हिंदुस्तान के अखिल हिन्दुओं की राष्ट्र भाषा हिंदी है। ऐसा उद्घोष व प्रयास किया था।

(सन्दर्भ–वीर वाणी पृष्ठ 64)

शहीद भगत सिंह ने पंजाब की भाषा तथा लिपि विषयक समस्या के विषय में अपने विचार भाषण के रूप में प्रस्तुत करते हुए हिंदी भाषा के समर्थन में कहा था कि–

बहुत से आदर्शवादी सज्जन समस्त जगत को एक राष्ट्र, विश्व राष्ट्र बना हुआ देखना चाहते हैं। यह आदर्श बहुत सुंदर हैं। हमको भी इसी आदर्श को सामने रखना चाहिए। उस पर पूर्णतया आज व्यवहार नहीं किया जा सकता, परन्तु हमारा हर एक कदम, हमारा हर एक कार्य इस संसार की समस्त जातियों, देशों तथा राष्ट्रों को एक सुदृढ़ सूत्र में बांधकर सुख वृद्धि करने के विचार से उठना चाहिए। उससे पहले हमको अपने देश में यही आदर्श कायम करना होगा। समस्त देश में एक भाषा, एक लिपि, एक साहित्य, एक आदर्श और एक राष्ट्र बनाना पड़ेगा, परन्तु समस्त एकताओं से पहले एक भाषा का होना जरुरी है, ताकि हम एक दूसरे को भली भान्ति समझ सके। एक पंजाबी और एक मद्रासी इकट्ठे बैठकर केवल एक–दूसरे का मुँह ही न ताका करें, बल्कि एक–दूसरे के विचार तथा भाव जानने का प्रयत्न करें। परन्तु यह पराई भाषा अंग्रेजी में नहीं, बल्कि हिंदुस्तान की अपनी भाषा हिंदी में होना चाहिए।

महात्मा गाँधी हिंदी भाषा के कितने बड़े समर्थक थे इसका पता उनके इस कथन से मिलता है जब उन्होंने कहा था की जगदीश चन्द्र बसु आदि विद्वानों के आविष्कार जनता की भाषा में प्रकट किये जाते तो जिस प्रकार तुलसी रामायण जनता की भाषा में लिखी होने के कारण अपनी चीज बनी हुई हैं, उसी प्रकार से विज्ञान की चर्चायें, विज्ञान के आविष्कार जनता के जीवन को प्रभावित करते।

स्वामी दयानंद और आर्यसमाज की हिंदी भाषा को देन निश्चित रूप से अविस्मरणीय एवं अनुकरणीय है।

37 वें राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन की सचित्र झलकियां

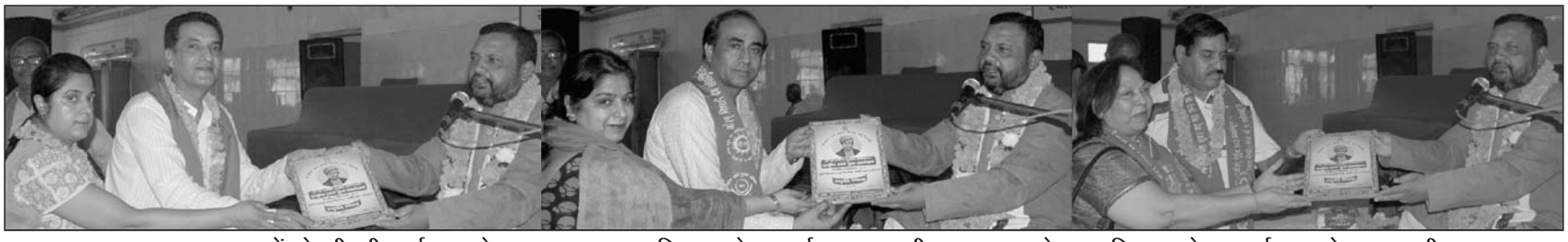

मुख्य यजमान बायें से श्रीमती अर्चना–सुरेन्द्र मानकटाला, ललिता–सुरेश आर्य, तृप्ता–सतीश आहुजा को सम्मानित करते आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री।

बायें से महापौर सुभाष आर्य, जगदीश आर्य, श्रीमती करूणा–तिलक चान्दना आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री से स्मृति चिन्ह प्राप्त करते हुए।

श्री राजीव कुमार ''परम'' सम्बोधित करते हुए, साथ में महामन्त्री महेन्द्र भाई व कोषाध्यक्ष धर्मपाल आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री । द्वितीय चित्र–चौ.लाजपतराय आर्य, (करनाल) को सम्मानित करते राष्ट्रीय उपाध्यक्ष यशोवीर आर्य व डा.अनिल आर्य।

''आर्य युवा रत्न'' से सम्मानित श्री अरूण आर्य (नरेला), साथ में मायाप्रकाश त्यागी, डा.अनिल आर्य, शिशुपाल आर्य, प्रकाशवीर शास्त्री व सौरभ गुप्ता। द्वितीय चित्र–''आर्य श्रेष्ठी सम्मान'' प्राप्त करते श्री राजपाल पुलियानी (महावीर नगर), साथ में श्री मायाप्रकाश त्यागी, मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद), प्रवीन आर्या, कन्हैयालाल मदान व डा. अनिल आर्य।

आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर) को सम्मानित करते देवेन्द्र भगत, चन्द्र दुर्गा व डा. अनिल आर्य। द्वितीय चित्र–श्री मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद) को सम्मानित करते शिशुपाल आर्य, राजेश्वर मुनि (कैथल), तृतीय चित्र–स्वामी नरदेव आर्य (उड़ीसा) को सम्मानित करते हुए चतरसिंह नागर, चौ.लाजपतराय आर्य व डा.अनिल आर्य।

(पृष्ठ 1 का का शेष)

वैदिक विद्वान स्वामी धर्ममुनि जी (बहादुरगढ), स्वामी कमलानन्द जी (चिकोस्वालिया), स्वामी राजेश्वर मुनि (कैथल), यशपाल आर्य (पार्षद), भाजपा नेता सत्यनारायण डंग, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, रामकृष्ण शास्त्री (राजस्थान), आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दौर), मित्रमहेश आर्य (अहमदाबाद),सुभाष बब्बर(जम्मू),स्वामी नरदेव जी(उड़ीसा),चौ.लाजपतराय आर्य,स्वतन्त्र कुकरेजा(करनाल),प्रवीन आर्य(गाजियाबाद),ब्र.दीक्षेन्द्र आर्य,अशोक बांगड(रोहतक),आर्य नेता जगदीश आर्य,प्रो.जयप्रकाश आर्य(पलवल),डा. गजराजसिंह आर्य(फरीदाबाद),ओम सपरा(मैट्रो पोलटेन मैजिस्टेट),सुनील गुप्ता(पी.आर.ओ.केन्द्रीय कारागार),गायत्री मीना(नोएडा),कै.अशोक गुलाटी,अजय गुप्ता(अम्बाला),वीरेन्द्र योगाचार्य आदि ने भी अपने विचार रखे । नरेन्द्र आर्य ''सुमन'' के मधुर भजनों ने वातावरण को सुन्दर बना दिया।

आर्य श्रेष्ठी अवार्ड से– प्रकाशचन्द आर्य, राजपाल पुलियानी व आर्य युवा रत्न अवार्ड से – दिनेश आर्य (पलवल), अरूण आर्य (नरेला), शिशुपाल आर्य (दिलशाद गार्डन) को सम्मानित किया गया। सौरभ गुप्ता व योगेन्द्र शास्त्री के निर्देशन में आर्य युवकों व युवतियों ने सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन द्वारा सभी का मन मोह लिया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से यशोवीर आर्य, विश्वनाथ आर्य ,धर्मपाल आर्य, सुरेश आर्य, देवेन्द्र भगत, राकेश आर्य, ओमवीरसिंह, चतरसिंह नागर, सुरेन्द्र शास्त्री, सन्तोष शास्त्री, वीरेश आर्य, अमीरचन्द रखेजा, हरिचन्द आर्य, अशोक आर्य, राजीव आर्य, उर्मिला आर्या, जितेन्द्र डावर, अर्चना पुष्करना, रामसेवक आर्य, वेदप्रकाश शास्त्री, मनोज मान, जीवनलाल आर्य, कृष्णचन्द पाहुजा, सोहनलाल मुखी, नन्दलाल शास्त्री, माधवसिंह, प्रणवीर आर्य, सुदेश भगत,र वि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, मदनमोहन सलुजा, नरेन्द्र आर्य,के.एल.राणा, प्रकाशवीर शास्त्री, देवदत आर्य, प्रि0श्यामलाल आर्य, प्रदीप आर्य, रोहित आर्य, अनुज आर्य, मानवेन्द्र शास्त्री, सुभाष वधवा, संजीव आर्य, सन्तोष वधवा, पं.सुरेश झा, चन्द्रमोहन खन्ना, रामकृष्ण सतीजा, रमेश खजुरिया (जम्मु), संजीव ढाका (बागपत) आदि दल बल सहित उपस्थित हुए। प्रातः काल नाश्ता, दोपहर ऋषि लंगर व सांय काल चाय–अल्पाहार की सुन्दर व भरपूर व्यवस्था की गई थी। अत्यन्त उत्साह व जोश के साथ सभी वापिस लौटे। राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन की शानदार सफलता के लिए आप सब का हार्दिक धन्यवाद।

37 वें राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन की सचित्र झलकियां

तपस्वी आर्य संन्यासी स्वामी धर्ममुनि जी को सम्मानित करते महापौर सुभाष आर्य, डा. अनिल आर्य,प्रवीन आर्य। द्वितीय चित्र–श्री ओम सपरा (मैट्रो पोलटेन मैजिस्ट्रेट व प्रधान,उतरी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल) को सम्मानित करते मायाप्रकाश त्यागी,प्रवीन आर्या,ड.अनिल आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा।

श्री रामकृष्ण शास्त्री (बहरोड़,राजस्थान) को सम्मानित करते डा. अनिल आर्य, स्वतन्त्र कुकरेजा व शिशुपाल आर्य। द्वितीय चित्र–सुप्रसिद्धसाहित्यकार श्री लक्ष्मण राव को सम्मानित करते स्वामी कमलानन्द जी (चिकोस्वालिया), ओम सपरा व डा.अनिल आर्य।

''आर्य श्रेष्ठी सम्मान'' से श्री प्रकाशचन्द आर्य(अशोक नगर, दिल्ली) को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य, साथ में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, स्वतन्त्र कुकरेजा,पवन गांधी आदि। द्वितीय चित्र–भाजपा नेता श्री सत्यनारायण डंग को सम्मानित करते वीरेन्द्र योगाचार्य, डा.अनिल आर्य व मित्रमहेश आर्य।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के ''जमीन के कार्यकर्ता'' जिन पर हमें गर्व है

श्री विनोद पुष्करना को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, श्री माया प्रकाश त्यागी व श्री प्रकाशवीर शास्त्री। द्वितीय चित्र में आर्य समाज सुन्दर विहार दिल्ली के श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के पर्व पर श्री क्षेत्र पाल, प्रधान व मन्त्री श्री अमरनाथ बत्रा को सम्मानित करते डॉ. अनिल आर्य, श्री मदन मोहन सालूजा, श्री चन्द्र मोहन खन्ना, डॉ. वर्मा

दानी महानुभावों से अपील

यदि आप केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के कार्य व गतिविधियों से सन्तुष्ट हैं तो हमें सहयोग करें,कृपया अपना सहयोग परिषद् के खाता सं. **10205148690** स्टेट बैंक आफ इण्डिया, घन्टाघर, दिल्ली–**110007**, आई.एफ.एस.कोड **-SBIN0001280** पर सीधे भेज कर हमें फोन न. **9868002130** पर एस.एम.एस कर दें जिससे रसीद भेजी जा सके। अग्रिम धन्यवाद सहित –

डा. अनिल आर्य, मो.**09810117464**.

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली–5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी–176–177, कबीर बस्ती, दिल्ली–7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970